*स्वागत भाषण**

दीपक मोहन्ती

प्रोफेसर माइकेल स्पेन्स जी, गवर्नर डॉ. सुब्बाराव जी, सम्माननीय आमंत्रित अतिथियो एवं बंधुओ। भारतीय रिज़र्व बैंक की तरफ से मैं इस मुंबई महानगरी में हमारे प्रथम अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान सम्मेलन में आप सबका हार्दिक स्वागत करता हूँ।

2. मुंबई, जो मछली पकड़ने की जगह थी, को पुर्तगाल ने इंग्लैंड को दहेज में भेंटस्वरूप दिया, और जिसे बाद में 10 पाउंड में ईस्ट इंडिया कंपनी को पट्टे पर दे दिया गया। आज आपको मुंबई में इस कीमत में एक वर्ग इंच की ज़मीन भी नहीं मिलेगी। मुंबई में काफी बदलाव हुआ है और उसके मूल्य व आकृति में वृद्धि हुई है। मुंबई आधुनिक भारत का प्रवेश द्वार है और भारत की वाणिज्यक राजधानी भी। विश्व के सबसे बड़े फिल्म उद्योग का गढ़ है, यह 'सपनों का शहर' डैनी बायले की 'स्लमडॉग मिलिनेयर' और ए.आर. रहमान के 'जय हो' के सुरीले गीत से लोकप्रिय बन गया है। मुंबई एक ऐसा शहर है जो कभी झपकी नहीं लेता। आपको इस बात का एहसास हुआ ही होगा कि अधिकांश अंतरराष्ट्रीय उड़ानें आधी रात को ही उतरती हैं। मुझे उम्मीद है कि आपने आराम किया होगा और आज के दिन के लिए आप तैयार हैं। इस शहर ने कई तरह की प्रतिकूल स्थितियों का सामना किया है, किंतु यह पूरे जोश के साथ पटरी पर वापस लौट आया है, जिससे इसका मनोबल जाहिर होता है। मुझे विश्वास है कि आपको इस विराम के दौरान इसकी गतिशीलता का एहसास होगा।

3. मैं एक घटना का जिक्र करना चाहता हूँ। आपको विदित है कि रिज़र्व बैंक अपना प्लैटिनम् जयंती वर्ष मना रहा है, जोकि इस विकासमान संस्था के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। इस बैंक की स्थापना 1 अप्रैल 1935 में हुई। यह 1949 में निजी स्वामित्वाधीन संस्था से सरकारी स्वामित्व वाली संस्था बन गया। इन 75 वर्षों में इस बैंक ने महत्वपूर्ण बदलाव देखे हैं, किंतु

* दिनांक 12 फरवरी 2010 को मुंबई में आयोजित 'वित्तीय संकट के संदर्भ में केंद्रीय बैंकिंग के समक्ष चुनौतियां' पर प्रथम अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान सम्मेलन में श्री दीपक मोहन्ती, कार्यपालक निदेशक, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा दिया गया अभिनंदन भाषण।

देश के आर्थिक नीति क्षेत्र में इसने अपना प्रमुख स्थान कायम रखा हुआ है।

4. भारतीय रिज़र्व बैंक कई मायनों में एक संपूर्ण सेवाप्रदाता केंद्रीय बैंक है। इसका मौद्रिक नीति से परे एक व्यापक उद्देश्य है, जैसे मुद्रा प्रबंधन, बैंकों व गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थाओं का विनियमन, मुद्रा, विदेशी मुद्रा और सरकारी प्रतिभूति बाज़ारों का विनियमन तथा लोक ऋण प्रबंधन। इसलिए हमारे अनुसंधान में भी अन्य केंद्रीय बैंकों की तुलना में व्यापक चिंतन-मनन किया जाता है।

5. बैंक के प्लैटिनम् जयंती वर्ष समारोह के उपलक्ष्य में हमने कई पहलें की हैं और अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया है। यह तीन दिशाओं में समांतर रूप से संपन्न हुआ। पहला, रिज़र्व बैंक की कार्य-सूची को समर्थन प्रदान करने हेतु कई शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन और बैंक को एक ज्ञानदात्री संस्था के रूप में प्रदर्शित करना। दूसरा, कई आंतरिक कार्यक्रमों का आयोजन, जिनमें वर्तमान व निवर्तमान रिज़र्व बैंक स्टाफ को सम्मिलित कर रिज़र्व बैंक परिजनों के बीच अपनेपन और समावेशिता की भावना पैदा करना। तीसरा इस देश के आम व्यक्ति से संपर्क साधने के समग्र उद्देश्य की दृष्टि से वित्तीय समावेशन और वित्तीय साक्षरता का आउटरीच कार्यक्रम। अतः हम इस प्लैटिनम जयंती वर्ष में सुदूरतम गांव से लेकर आप जैसे लोगों के वैश्विक बौद्धिक अभिमत तक पहुंच पाकर एक व्यापक क्षेत्र को समाविष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं।

6. विश्वभर में व्याप्त वित्तीय संकट से यह संकेत मिलता है कि भले ही किसी भी देश-विशेष के भौगोलीकरण का स्तर और उसकी घरेलू नीतियां सुदृढ़ हों, लेकिन उसकी अर्थव्यवस्था वित्तीय उथलपुथल से अपने-आपकी रक्षा नहीं कर सकती। इस संकट ने हमारे मूलभूत सिद्धांतों के समक्ष चुनौती पैदा कर दी है। इससे समष्टि-वित्तीय नीतिगत ढांचे में आमूल परिवर्तन करने के सही समय का पता चल सका। इस परिप्रेक्ष्य में सम्मेलन की विषय-वस्तु 'वित्तीय संकट के संदर्भ में केंद्रीय बैंकिंग के समक्ष चुनौतियां' समीचीन प्रतीत होती है।

7. अतीत के अवलोकन से लाभ हुआ, वहीं यह संकट में सभी के लिए एक शिक्षाप्रद अनुभव रहा है। यद्यपि कई मुद्दों पर अभी निष्कर्ष नहीं निकला है, तथापि, संकट से अब भी बहुत से सबक मिल सकते हैं। पहला, इस दृष्टिकोण को अधिक समर्थन मिलता जा रहा है कि केंद्रीय बैंकों के नीतिगत उद्देश्य परंपरागत रूप से यथापरिभाषित मूल्य स्थिरता से अपेक्षाकृत अधिक व्यापक होने चाहिए। दूसरा, इस संकट ने संकटजन्य परिस्थितियों का सामना करने के लिए समुचित वित्तीय परिवेश तैयार करने हेतु अच्छे समय में वित्तीय समेकन की खूबियों को उजागर कर दिया है। तीसरा, और व्यापक रूप से सर्वमान्य सबक यह है कि वित्तीय संस्थाएं अपेक्षाकृत कम लीवरेज्ड हों और बेहतर ढंग से विनियमित हों। इसका तात्पर्य अतिविनियमन से नहीं, बल्कि सटीक विनियमन से है। अंततः विश्व के बढ़ते भौगोलीकरण के दौर में संकट की रोकथाम के लिए और उसका सामना करने के लिए अंतरराष्ट्रीय वित्तीय ढांचे में प्रभावशाली सुधार किया जाना आवश्यक है।

8. इस परिप्रेक्ष्य में अब मैं सम्मेलन की रूप-रेखा पर प्रकाश डालना चाहता हूँ। हम इस सम्मेलन की विषय-वस्तु को दो विशेष भाषणों और चार तकनीकी सत्रों में संपन्न करेंगे। सर्वप्रथम हमारे गवर्नर डॉ. सुब्बाराव उद्घाटन भाषण देंगे, तदुपरांत प्रोफेसर माइकल स्पेन्स मुख्य भाषण प्रस्तुत करेंगे। तत्पश्चात् पत्र प्रस्तुतीकरण और विचार-विमर्श होगा। प्रथम तकनीकी सत्र में संकट के दौर में मौद्रिक नीति के कार्यान्वियन से प्राप्त अनुभव और सबकों को समाविष्ट किया जाएगा। द्वितीय सत्र में यह पता लगाया जाएगा कि एक ओर वित्तीय बाज़ार के वैश्वीकरण तो दूसरी ओर वित्तीय नवोन्मेष ने किस

प्रकार से मौद्रिक नीति के कार्यान्वयन में अड़चनें डाली हैं। तृतीय सत्र में वित्तीय क्षेत्र में विकास के संदर्भ में विनियमन और पर्यवेक्षण के समक्ष चुनौतियों पर प्रकाश डाला जाएगा। दिन के चतुर्थ व अंतिम सत्र में मौजूदा विस्तारकारी मौद्रिक व वित्तीय रुख से समुचित एक्जिट नीति की तैयारी पर चर्चा की जाएगी।

9. हम रात्रि विश्राम के बाद कल गवर्नरों की पैनल चर्चाओं के दो सत्र में मिलेंगे। दोनों पैनलों की अध्यक्षता प्रख्यात अर्थशास्त्री और स्तंभ-लेखक श्री मार्टिन वुल्फ द्वारा की जाएगी।

10. प्रथम पैनल में मौद्रिक नीति के क्षेत्रों पर ध्यान संकेंद्रित किया जाएगा। इसके अंतर्गत मुद्रास्फीति संबंधी लक्ष्य-निर्धारण की दृष्टि से संकट के निहितार्थ; मौद्रिक नीति में आस्ति- मूल्यों की भूमिका; संकट के प्रबंधन से सुधार प्रबंधन की ओर केंद्रीय बैंकों की बदलती भूमिका शामिल होगी।

11. द्वितीय पैनल में वैश्विक वित्तीय ढांचे पर प्रकाश डाला जाएगा। इसके अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) का सुधार; क्षेत्रीय मौद्रिक व्यवस्थाएं; वैश्विक आरक्षित निधि में धारित विदेशी मुद्रा प्रणाली का भविष्य; एवं पूंजी प्रवाह तथा विनिमय दर नीतियां समाविष्ट होंगी।

12. मेरे विचार में पूरा विश्व इस तूफान के बाद सही पटरी पर वापस लौट रहा है, ऐसे में हमें अब वित्तीय जगत को सुरक्षित स्थान पर रखने के संबंध में पुनरावलोकन करना है और लीक से हटकर सोचना है। मुझे विश्वास है कि यह उच्च स्तरीय सम्मेलन, जिसमें आपके विशद अनुभव और बुद्धिमत्ता का लाभ प्राप्त हो रहा है, भविष्य में केंद्रीय बैंकिंग के समक्ष चुनौतियों को जानने में हमें अत्यंत सहायता प्रदान करेगा।

13. अभिलेख की दृष्टि से, मैं यह कहना चाहता हूँ कि इस सम्मेलन की कार्यवाहियां रिजर्व बैंक की वेबसाइट (rbi.org.in) पर उपलब्ध कराई जाएंगी।

14. अंत में, मैं आप सभी का मराठी में स्वागत करता हूँ : *आमच्या मुंबईत तुम्हा सर्वांचे स्वागत आहे।* आप सभी का मुंबई में स्वागत है।